

नशा: समाज के लिए एक अभिशाप

¹ डॉ सुमेधा चौधरी, ² आयुषी मिश्रा

भूमिका:

नशा एक धीमा जहर है, जो व्यक्ति को अंदर से खोखला कर देता है और समाज के नैतिक मूल्यों को नष्ट कर देता है। वर्तमान समय में नशाखोरी एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है। युवाओं से लेकर वृद्धों तक, गरीब से लेकर अमीर तक, हर वर्ग में नशे की लत तेजी से फैल रही है। शराब, तंबाकू, गुटखा, सिगरेट, गांजा, चरस, हेरोइन, अफीम और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को बर्बाद कर रहा है।

आज नशे की लत केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह पूरे परिवार, समाज और देश के लिए एक बड़ा अभिशाप बन चुकी है। यह न केवल अपराधों को जन्म देता है, बल्कि समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करता है।

नशे का अर्थ और प्रकार

नशा एक ऐसी आदत है, जिसमें व्यक्ति किसी पदार्थ का बार-बार सेवन करने के लिए मजबूर हो जाता है, भले ही वह जानता हो कि यह उसके लिए हानिकारक है। नशे के कई प्रकार होते हैं:

1. धूम्रपान (सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू, हुक्का आदि) – यह फेफड़ों और हृदय को नुकसान पहुंचाता है।
2. मादक द्रव्य (अफीम, चरस, गांजा, हेरोइन, ब्राउन शुगर आदि) – यह मस्तिष्क को प्रभावित करता है और मानसिक रोगों को जन्म देता है।

3. शराब – यह लीवर, किडनी और मानसिक संतुलन को प्रभावित करता है।

4. औषधीय नशा (सिरप, नींद की गोलियाँ, इंजेक्शन आदि) – ये दवाएँ जरूरत से ज्यादा लेने पर शरीर को बुरी तरह नुकसान पहुंचाती हैं। इन सभी प्रकार के नशे व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से कमजोर बना देते हैं।

नशे के कारण

समाज में नशाखोरी के बढ़ने के पीछे कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

1. बुरी संगति – युवाओं में नशे की शुरुआत अक्सर दोस्तों और बुरी संगति के कारण होती है।
2. तनाव और अवसाद – आधुनिक जीवनशैली में बढ़ता तनाव लोगों को नशे की ओर धकेलता है।
3. फैशन और दिखावे की मानसिकता – कुछ लोग नशे को स्टेटस सिंबल मानते हैं और इसे एक फैशन की तरह अपनाते हैं।
4. आसानी से उपलब्धता – बाजार में अवैध रूप से नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता भी नशाखोरी को बढ़ावा देती है।
5. परिवारिक समस्याएँ – माता-पिता के झगड़े, गरीबी, बेरोजगारी आदि कारणों से भी लोग नशे की लत में पड़ जाते हैं।

नशे के दुष्परिणाम

1. शारीरिक और मानसिक हानि

¹ डॉ सुमेधा चौधरी, ² आयुषी मिश्रा,

सामुदायिक विज्ञान विभाग

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर

नशे की लत व्यक्ति के शरीर को बुरी तरह से प्रभावित करती है। इसके कारण कैंसर, हृदय रोग, लीवर सिरोसिस, फेफड़ों की बीमारी, मानसिक असंतुलन, याददाश्त की कमजोरी और आत्महत्या जैसी समस्याएँ बढ़ जाती हैं।

2. पारिवारिक और सामाजिक विघटन

नशे के कारण परिवार बर्बाद हो जाते हैं। नशे की लत के कारण व्यक्ति हिंसक हो जाता है, घरेलू हिंसा बढ़ती है और घर के अन्य सदस्य मानसिक तनाव में आ जाते हैं।

3. अपराध और सामाजिक अस्थिरता

नशाखोरी अपराधों को जन्म देती है। चोरी, लूटपाट, हत्या, बलात्कार जैसी घटनाओं में अधिकतर नशे में धुत लोग शामिल होते हैं। इसके अलावा, ड्रग माफिया और नशे के कारोबार से जुड़े गिरोह समाज में अस्थिरता पैदा करते हैं।

4. आर्थिक नुकसान

नशे की लत व्यक्ति को आर्थिक रूप से कमजोर बना देती है। लोग नशे पर अपनी गाढ़ी कमाई खर्च कर देते हैं और कई बार कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं। इससे समाज और देश की अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

नशे की रोकथाम के उपाय

नशे की समस्या से निपटने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

1. शिक्षा और जागरूकता

विद्यालयों और कॉलेजों में नशे के दुष्परिणामों पर विशेष जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। बच्चों और युवाओं को इसके खतरों से अवगत कराना जरूरी है।

2. पारिवारिक सहयोग

माता-पिता को अपने बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। बच्चों के व्यवहार में किसी भी असामान्यता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और उन्हें सही मार्गदर्शन देना चाहिए।

3. कानूनी सख्ती

सरकार को नशीले पदार्थों की तस्करी और बिक्री पर सख्त प्रतिबंध लगाना चाहिए। दोषियों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि नशे का व्यापार बंद हो सके।

4. पुनर्वास केंद्रों की स्थापना

जो लोग नशे की लत में पड़ चुके हैं, उनके लिए अधिक से अधिक नशा मुक्ति केंद्र खोले जाने चाहिए, जहाँ उन्हें सही चिकित्सा और मानसिक उपचार दिया जा सके।

5. खेल और स्वस्थ गतिविधियों को बढ़ावा

युवाओं को खेलकूद और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में व्यस्त रखना चाहिए ताकि वे नशे से दूर रहें।

नशा समाज के लिए एक अभिशाप है, जो व्यक्ति, परिवार और देश को बर्बाद कर रहा है। इसे रोकने के लिए हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। नशे की लत को केवल कानून के बल पर नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, शिक्षा और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देकर ही समाप्त किया जा सकता है।

हमें यह समझना होगा कि नशे से न केवल हमारा जीवन प्रभावित होता है, बल्कि हमारा परिवार और समाज भी इससे अछूता नहीं रहता। यदि हम एक स्वस्थ, विकसित और खुशहाल समाज की कल्पना करते हैं, तो हमें नशे के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना होगा।